IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

इसराइल,अमेरिका-ईरान संघर्ष : आखिर हासिल क्या ?

[1] निधि कटियार
शोधार्थी (रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन),
पी.पी.एन. कॉलेज, कानपुर (उ.प्र.)।

[2] प्रो. (डॉ.) डी.सी. कटियार
विभागाध्यक्ष (रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन),
पी.पी.एन. कॉलेज, कानपुर (उ.प्र.)।

सार - 21वीं सदी में बदलती वैश्विक सुरक्षा स्थिति में मध्य पूर्व एक ऐसा संवेदनशील और संघर्षग्रस्त क्षेत्र बना हुआ है, जहाँ उत्पन्न होते छोटे-छोटे क्षेत्रीय तनाव भी वैश्विक संकट में बदल सकते हैं। अमेरिका, इसराइल और ईरान के मध्य बढ़ता आपसी तनाव अब एक संघर्ष का रूप ले चुका है। इस संघर्ष का कारण दो अलग-अलग विचारधारा, शक्ति संतुलन, राजनीतिक गठबंधन जैसे विभिन्न मुद्दे हैं। यह संघर्ष मध्य पूर्व में न केवल शांति और स्थिरता को प्रभावित करता है, बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, ऊर्जा सुरक्षा, वैश्विक व्यापार, अर्थव्यवस्था को भी प्रभावित करता है। समुद्री व्यापार मार्गों पर संकट, तेल कीमतों में वृद्धि, वैश्विक शक्तियों के मध्य प्रतिस्पर्धा, शरणार्थी संकट इसके मुख्य परिणाम हैं। इसके अलावा संयुक्त राष्ट्र संघ तथा अन्य अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की प्रभावशीलता भी इस संघर्ष के संदर्भ में स्पष्ट रूप से प्रकट हुई है। वर्तमान में यह संघर्ष निर्णायक जीत के स्थान पर शक्ति प्रदर्शन और रणनीतिक संतुलन का उदाहरण साबित हो रहे हैं। अमेरिका अपनी अंतर्राष्ट्रीय नेतृत्व की भूमिका बनाए रखना चाहता है, इजराइल अपने क्षेत्रीय वर्चस्व तथा राष्ट्रीय सुरक्षा को सुरक्षित बनाए रखना चाहता है, जबकि ईरान पश्चिमी दबावों के विरुद्ध अपनी रणनीतिक तथा वैचारिक स्थिति को मजबूत करने के लिए प्रयासरत् है। परिणामस्वरुप यह संघर्ष वैश्विक शक्ति राजनीति का उदाहरण बनकर उभरा रहा है। यह शोध पत्र 40 दोनों तक चले त्रिकोणीय संघर्ष का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

प्रमुख शब्द- अमेरिका,इजरायल-ईरान युद्ध, वैश्विक सुरक्षा, इस्लामी क्रांति 1979, परमाणु कार्यक्रम, पश्चिम एशिया सुरक्षा

संघर्ष की पृष्ठभूमि- वर्तमान संघर्ष की जड़े 1979 की इस्लामी क्रांति से जुड़े हैं । 1979 की क्रांति से पूर्व इसराइल तथा ईरान के मध्य अच्छे संबंध थे। लेकिन क्रांति के बाद दोनों देशों के मध्य संबंधों में बड़ा परिवर्तन आया। जिसने पश्चिम एशिया की राजनीति को प्रभावित किया । आयतुल्लाह खोमैनी के सत्ता में आने के पश्चात् नई ईरानी सरकार के द्वारा इजराइल को "अवैध राज्य" घोषित कर फिलिस्तीन के समर्थन को अपनी नीति का आधार बनाया गया। जिसके परिणामस्वरुप दोनों देशों के मध्य राजनीतिक, वैचारिक और सामरिक प्रतिस्पर्धा बढ़ी। समय के साथ इसराइल अपने अस्तित्व के लिए ईरान को बड़ा खतरा मानने लगा तथा यह संघर्ष छाया युद्ध के रूप में विकसित हुआ। जिसमें इजराइल द्वारा सीरिया एवं अन्य क्षेत्रों में ईरानी ठिकानों पर सैन्य कार्यवाही तथा ईरान द्वारा हिज्बुल्लाह और हमास जैसे संगठनों को समर्थन दिया जाने लगा। 21वीं सदी में यह संघर्ष और अधिक जटिल हो गया, क्योंकि इसराइल अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए ईरान के परमाणु कार्यक्रम को खतरा मानता है।

युद्ध का वर्तमान स्वरूप - मध्य पूर्व जैसे अस्थिर क्षेत्र में सबसे जटिल और दीर्घकालिक संघर्ष इसराइल, अमेरिका और ईरान के मध्य देखा गया, जो 28 फरवरी 2026 से 8 अप्रैल 2026 तक चलने वाला 40 दिवसीय युद्ध था। इस युद्ध की शुरुआत अमेरिका और इसराइल द्वारा ईरान पर संयुक्त हवाई हमले करने से शुरू हुई। यह कार्रवाई ईरान के परमाणु और बैलिस्टिक मिसाइल कार्यक्रमों को निशाना बनाने और सत्ता परिवर्तन के उद्देश्य से की गई। इन शुरुआती हमले में ईरान के सर्वोच्च नेता आयतुल्ला खामेनेई सहित कई उच्च अधिकारी मारे गए। इस हमले के जवाब में ईरान और उसके प्रतिनिधियों ने इसराइल और फारस की खाड़ी में अमेरिकी सहयोगियों पर हमले शुरू किये।

यह संघर्ष मध्य पूर्व में बढ़ते भू राजनीतिक तनाव का परिणाम था। जो मध्य पूर्व के इतिहास में महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। पिछले कई दशकों के कूटनीतिक तनाव, आर्थिक प्रतिबंधों, वैचारिक मतभेदों ने इस संघर्ष को प्रत्यक्ष सैन्य टकराव और विनाशकारी युद्ध में परिवर्तित कर दिया। जिसने क्षेत्रीय एवं वैश्विक स्थिरता को प्रभावित किया।

इस त्रिकोणीय संघर्ष की पृष्ठभूमि में मुख्य रूप से ईरान का विवादास्पद परमाणु कार्यक्रम और क्षेत्रीय प्रभाव विस्तार की रणनीति है। इसराइल ईरान को अपने अस्तित्व के लिए सबसे बड़ा खतरा मानता है, वहीं अमेरिका की रणनीति मध्य पूर्व में अपने सामरिक हितों की रक्षा सुनिश्चित करना एवं ऊर्जा आपूर्ति को सुरक्षित करने के साथ ही अपने सहयोगी इसराइल तथा खाड़ी देशों की सुरक्षा करने पर केंद्रित रही है। साथ ही इस युद्ध की कोख से अनेक प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष लक्षण, कारक भी परिलक्षित हुए जो निम्नवत हैं, जिस पर प्रकाश डालना भी समीचीन होगा।

मध्य पूर्व और पश्चिम एशिया में नई हथियारों की होड़- इसराइल, अमेरिका और ईरान के मध्य बढ़ते संघर्ष ने मध्य पूर्व और पश्चिम एशिया की सुरक्षा को पूरी तरह से परिवर्तित करा है। इस संघर्ष के मध्य खाड़ी देशों को ईरान के द्वारा निशाना बनाया गया, जिसके बाद खाड़ी देश रणनीतिक रूप से स्वयं को असुरक्षित महसूस कर रहे हैं। अब यह देश अपनी सुरक्षार्थ सामरिक स्वायत्तता तथा रक्षा बजट पर अप्रत्याशित वृद्धि करेंगे तथा पूरी तरह अमेरिका पर निर्भर न होकर चीन, रूस, इसराइल जैसे नए विकल्पों को चुनेंगे। जो इन्हें अपने हथियार बेचेंगे । जिसके परिणामस्वरुप यहाँ हथियारों की होड़ शुरू होने की प्रबल संभावना है। जिसमें पारंपरिक सैन्य शक्ति के साथ युद्ध तकनीक, उन्नत लड़ाकू विमान, वायु रक्षा प्रणालियों तथा आधुनिक हथियारों पर बड़ी मात्रा में निवेश को

शामिल किया जाएगा। साथ ही संयुक्त राष्ट्र द्वारा विश्व शांति हेतु चलाए जा रहे अभियानों एवं निशस्त्रीकरण के क्षेत्र में अब तक किए गए प्रयास भी प्रभावित होंगे, जो मानवता की दृष्टि से अनुचित प्रतीत होता है।

नाटो देशों की भूमिका- नाटो की स्थापना अप्रैल 1949 में अमेरिका के द्वारा सामूहिक रक्षा के सिद्धांत पर की गई। जिसके तहत एक सदस्य देश पर हमला सभी पर हमला माना जाता है। वर्तमान में यह 32 देश का समूह है। जिसका प्रमुख उद्देश्य अपने सदस्य देशों की सुरक्षा को सुनिश्चित करना है।

वर्तमान संघर्ष में जब अमेरिकी हितों पर आँच आई, तो नाटो देशों की प्रतिक्रिया एकजुट ना होकर खंडित रही। जिससे अमेरिका के वैश्विक वर्चस्व को बड़ा झटका लगा। नाटो की स्थापना का मूल आधार सदस्य देशों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है, लेकिन इसराइल नाटो का सदस्य नहीं है, इसलिए नाटो के अन्य देशों के लिए इसराइल की सुरक्षा हेतु युद्ध में उतरना कानूनी रूप से अनिवार्य नहीं है। नाटो ने आधिकारिक तौर पर ईरान पर हमले की निंदा की है, लेकिन एक संगठन के रूप में सीधे सैन्य हस्तक्षेप से परहेज किया है। नाटो देशों के भीतर इस संघर्ष को लेकर एक राय नहीं है । विभिन्न देशों की प्रतिक्रिया को भिन्न-भिन्न देखा जा सकता है । जिससे नई विश्व व्यवस्था स्थापित होने की प्रबल संभावना है। नाटो और यूरोपीयन समूह द्वारा इस युद्ध को समर्थन न देकर एक नई बहस शुरू हो गई, जो निश्चित रूप से अमेरिकी वर्चस्व एवं संयुक्त राष्ट्र संघ की नीतियों को प्रभावित करेगा, पर भी विचार करना समीचीन होगा।

ईरान - इसराइल युद्ध का भारत पर प्रभाव- इसराइल, अमेरिका-ईरान के मध्य संघर्ष में भारत अपने कूटनीतिक दृष्टिकोण से सफल रहा और अपने देश में पेट्रोलियम, गैस, ऊर्जा जैसी विभिन्न देश की व्यवस्था से जुड़ी चीजों पर संकट नहीं आने दिया। भारत ने इस संघर्ष में एकपक्षीय समर्थन से बचते हुए ईरान तथा इसराइल के साथ बराबर संबंधों को स्थापित कर शांतिपूर्ण समाधान और संवाद पर जोर दिया है। जो रणनीतिक स्वायत्तता तथा कई देशों के साथ संतुलित संबंध बनाए रखने की नीति को दर्शाता है। लेकिन वर्तमान संघर्ष का प्रभाव भारत पर बहुआयामी है, जो भारत के राष्ट्रीय हितों को प्रभावित करता है। एक ओर भारत, अमेरिका तथा इसराइल के साथ अपने सुरक्षा रणनीतिक एवं तकनीकी संबंध बनाए है । वहीं दूसरी तरफ ईरान के साथ ऊर्जा सुरक्षा, क्षेत्रीय जुड़ाव और चाबहार पोर्ट जैसे महत्वपूर्ण हितों से जुड़ा है।

ऊर्जा सुरक्षा भारत के लिए मुख्य रूप से चिंता का विषय है। होर्मूज जलडमरूमध्य एक संकीर्ण चोक पॉइंट (55-95 किमी चौड़ा) तथा सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग है, जो ईरान, ओमान तथा संयुक्त अरब अमीरात के बीच स्थित है । यह तेल समृद्ध फारस की खाड़ी को ओमान की खाड़ी तथा अरब सागर से जोड़ता है। यह फारस की खाड़ी से खुले महासागर तक पहुंचाने का एकमात्र समुद्री रास्ता है। इसमें किसी भी प्रकार की अस्थिरता वैश्विक तेल कीमतों को तेजी से बढ़ा सकती है। जो भारत के व्यापार को प्रभावित करेगी। साथ ही खाड़ी देशों में काम कर रहे भारतीयों की सुरक्षा भी प्रमुख चिंता का विषय है। भारत गैस तथा कच्चे तेल आयात के लिए लगभग 50 फीसदी खाड़ी देशों पर निर्भर है। LNG आयत के लिए लगभग 53 फीसदी कतर तथा यूएई पर निर्भर है। वहीं 85 फीसदी LPG भी खाड़ी देशों से आती है।

यूरोपीय देश के समूह का दृष्टिकोण- वर्तमान संघर्ष में यूरोपीय देशों के द्वारा कूटनीतिक समाधान पर अधिक जोर दिया गया। इस त्रिकोणीय संघर्ष में यूरोपीय देशों की भूमिका संतुलित और क्षेत्रीय स्थिरता पर केंद्रित है। एक तरफ यूरोपीय संघ, फ्रांस, जर्मनी और ब्रिटेन जैसे देश इसराइल के साथ खड़े नजर आते हैं तथा इसराइल की सुरक्षा और आत्मरक्षा के अधिकारों का समर्थन करते हैं और ईरानी हमलों की निंदा करते हैं। साथ ही इन हमलों को अपनी सुरक्षा के लिए भी खतरा मानते हैं। दूसरी तरफ यूरोप इस बात से चिंतित है कि यदि यह संघर्ष बड़े क्षेत्रीय युद्ध में परिवर्तित होता है, तो उसका असर वैश्विक शांति पर पड़ेगा। जिससे ऊर्जा सुरक्षा, आर्थिक स्थिरता, शरणार्थी संकट जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। इसलिए यूरोपीय देश एक ओर ईरानी मिसाइल और ड्रोन कार्यक्रमों पर कठोर आर्थिक प्रतिबंध लगाने के पक्ष में हैं। जिससे उसे कमजोर किया जा सके । साथ ही वे इसरायल पर भी संयम बरतने का दबाव बनाते हैं। जिससे तनाव को कूटनीतिक माध्यम से कम किया जा सके तथा आपसी मतभेदों को वार्ता के माध्यम से सुलझा लिया जाए।

संयुक्त राष्ट्र संघ की भूमिका- संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् 24 अक्टूबर 1945 को अन्तर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने के उद्देश्य से की गई। लेकिन वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र संघ महाशक्तियों के सामने अपनी प्रभावी भूमिका निभाने में असफल दिखाई देता है। यह अनेक बड़े संघर्षों जैसे वियतनाम युद्ध, चीन-ताइवान, पाकिस्तान-अफगानिस्तान, इसरायल-हमास, भारत-पाकिस्तान, यूक्रेन-रूस, अमेरिका-ईरान में निर्णायक हस्तक्षेप करने में पूरी तरह सफल नहीं हो पाया। यह केवल युद्ध विराम, संयम और कूटनीतिक समाधान की अपील जारी करने तथा प्रस्ताव पारित करने तक सीमित रहा। वर्तमान संघर्ष में भी सुरक्षा परिषद में स्थाई सदस्यों के राजनीतिक हितों एवं वीटो अधिकार के कारण प्रभावी निर्णय लेने में असफल दिखाई पड़ता है। वर्तमान संघर्ष में जहाँ अमेरिका के द्वारा इजराइल को समर्थन प्राप्त होता है, लेकिन रूस और चीन का अलग दृष्टिकोण दिखाई पड़ता है । जिसके कारण संयुक्त राष्ट्र संघ कठोर निष्पक्ष का कार्यवाही नहीं कर पाता । यद्यपि संयुक्त राष्ट्र संघ शांति वार्ता को बढ़ावा देने, युद्ध विराम अपील, शरणार्थी सहायता तथा मानवीय सहायता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । लेकिन बड़े अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों को रोकने तथा महाशक्तियों की एकपक्षीय नीतियों पर नियंत्रण स्थापित करने में उसकी प्रभावशीलता सीमित दिखाई देती है। वर्तमान संघर्ष ने यह स्पष्ट किया है कि संयुक्त राष्ट्र संघ की प्रभावशीलता शक्तिशाली देशों की आपसी सहमति, राजनीतिक इच्छा और आपसी सहयोग पर निर्भर करती है। यदि यह संस्था इसी तरह से कार्य करती रही तो इन वैश्विक संघर्षों से तीसरे विश्व युद्ध होने की प्रबल संभावना रहेगी।

निष्कर्ष- वर्तमान संघर्ष वैश्विक राजनीतिक, शक्ति संतुलन एवं सामरिक प्रतिस्पर्धा का उदाहरण बनकर उभरा है। जो कि अब क्षेत्रीय युद्ध तक सीमित नहीं रह गया। वर्तमान संघर्ष यह बताता है कि अंतर्राष्ट्रीय विश्व व्यवस्था ऐसे वैश्विक ध्रुवीकरण की ओर तेजी से आगे बढ़ रही है, जहाँ शक्तिशाली राष्ट्र अपने विभिन्न हितों की रक्षा हेतु प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से युद्ध में हिस्सा ले रहे हैं । वही संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी संस्थाएँ शांति स्थापित करने हेतु प्रयासरत तो हैं, किंतु महाशक्तियों की प्रभावशीलता के कारण उसकी भूमिका सीमित रह जाती है । वर्तमान संघर्ष से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वैचारिक, आर्थिक एवं सामरिक प्रतिस्पर्धाएं लगातार बढ़ती जा रही हैं।

वर्तमान में हुए संघर्ष विराम के बाद जो संधि वार्ताएं विफल होती दिखाई दे रही हैं, उससे पुनः तनाव बढ़ाने की संभावना बनी हुई है। यदि भविष्य में यह युद्ध पुनः शुरू होता है, तो इसके परिणाम पूरे विश्व में व्यापक स्तर पर प्रदर्शित होंगे। जिसके परिणामस्वरुप गैस, तेल तथा अन्य वस्तुओं की कीमतों में तेजी से वृद्धि होगी। जिससे वैश्विक स्तर पर आर्थिक संकट और अधिक हो सकता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के द्वारा 10 मई को की गई **नेशन फर्स्ट** की घोषणा से ऐसा प्रतीत होता है कि अमेरिका, इजराइल और ईरान युद्ध का प्रभाव विश्व के तमाम अन्य क्षेत्रों पर भी पहुँच चुका है। जिससे भारत भी अब अछूता नहीं है। वर्तमान संकट के दौरान भारत ने संतुलित विदेश नीति अपनाते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नेशन फर्स्ट नीति के अंतर्गत ऊर्जा सुरक्षा, राष्ट्रीय हित एवं भारतीय नागरिकों की सुरक्षा को प्राथमिकता प्रदान की गई। यह संघर्ष उसके सामरिक एवं आर्थिक हितों को भी प्रभावित कर रहा है।

इसके साथ ही संयुक्त राष्ट्र संघ तथा अन्य महाशक्तियों को एकजुट होकर विश्व शांति बनाए रखने हेतु प्रयास करना चाहिए। इस हेतु संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी संस्था में वार्ता, मध्यस्थता और स्थाई समाधान हेतु कठोर प्रयास आवश्यक हैं, क्योंकि युद्ध किसी समस्या का विकल्प नहीं है, बल्कि मानवता, वैश्विक स्थिरता और आर्थिक व्यवस्था को क्षति पहुंचाता है। अतः विश्व समुदाय को कूटनीति, वार्ता, सहयोग तथा माननीय मूल्यों को प्राथमिकता देकर स्थाई शांति बनाए रखने हेतु कार्य करना चाहिए। जिससे भविष्य में तृतीय विश्व युद्ध जैसी विनाशकारी स्थितियों से बचाव किया जा सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1.VisionIAS. (n.d.). US-Israel attack on Iran: Causes, consequences and the Strait of Hormuz crisis. VisionIAS. https://www.visionias.in/blog/current-affairs/usisrael-attack-on-iran-causes-consequences-and-the-strait-of-hormuz-crisis

2. BBC News. (2026, April 10). US and Israel coordinate response after Iran conflict escalation. https://www.bbc.com/news/world-middle-east

3. Preventive Action, C. for. (2026, April 22). Iran's War With Israel and the United States. Global Conflict Tracker. https://www.cfr.org/global-conflict-tracker/conflict/confrontation-between-united-states-and-iran

4. AASHIQ HUSSAIN KHAN, DR. SANJOO GANDHI. "Iran-Israel sangharsh aur Bharat:ek adhyayan", International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT), ISSN:2320-2882,Vol.13,Issue9,pp.b25-b29,September2025,URL: http://www.ijcrt.org/IJCRT2509120

5.अमेरिका-इज़रायल-ईरान युद्ध में संघर्ष क्षेत्र https://www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/daily-news-analysis/conflict-zones-in-the-us-israel-iran-war

6.डिफेंस मॉनिटर, फरवरी-मार्च, 2026

7.संस्कृति आई.ए.एस. पत्रिका अप्रैल, 2026

8.द हिन्दू समाचार पत्र, अप्रैल, 2026

9. बीबीसी हिंदी आर्टिकल, मार्च 2026